यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स कृत

MPPSC/MPESB

प्रारम्भिक एवं मुख्य परीक्षा हेतु

मध्य प्रदेश

सामान्य ज्ञान

CAPSULE

प्रधान सम्पादक
ए.के. महाजन

लेखन एवं संकलन
परीक्षा विशेषज्ञ समिति

कम्प्यूटर ग्राफिक्स
बालकृष्ण, चरन सिंह

सम्पादकीय कार्यालय
12, चर्च लेन, प्रयागराज-211002
9415650134

Email : yctap12@gmail.com
website : www.yctbooks.com/www.yctfastbook.com/www.yctbooksprime.com
© All Rights Reserved with Publisher

प्रकाशन घोषणा

प्रधान सम्पादक एवं प्रकाशक आनन्द कुमार महाजन ने E:Book by APP Youth Prime BOOKS, से मुद्रित करवाकर, वाई.सी.टी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि., 12, चर्च लेन, प्रयागराज के लिए प्रकाशित किया।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने में सम्पादक एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरती गई है फिर भी किसी त्रुटि के लिए आपका सुझाव एवं सहयोग सादर अपेक्षित है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज होगा।

विषय-सूची

- मध्य प्रदेश : संक्षिप्त अवलोकन 3-6
- मध्य प्रदेश : भौतिक विन्यास 7-9
- मध्य प्रदेश : जलवायु एवं मिट्टी 10-12
- मध्य प्रदेश : वन, राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव अभयारण्य 13-18
- मध्य प्रदेश : नदियाँ एवं झीलें 19-22
- मध्य प्रदेश : कृषि एवं पशुपालन 23-30
- मध्य प्रदेश : सिंचाई एवं बहुउद्देशीय नदी घाटी परियोजनाएँ 31-33
- मध्य प्रदेश : उद्योग 34-39
- मध्य प्रदेश : खनिज एवं ऊर्जा संसाधन 40-44
- मध्य प्रदेश : परिवहन व्यवस्था 45-47
- मध्य प्रदेश : इतिहास 48-51
- मध्य प्रदेश : कला एवं संस्कृति 52-53
- मध्य प्रदेश : साहित्य एवं पत्र-पत्रिकाएं 54-57
- मध्य प्रदेश : जनजातियाँ 58-60
- मध्य प्रदेश : शिक्षा व्यवस्था 61-61
- मध्य प्रदेश : राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था 62-65
- मध्य प्रदेश : जनगणना 66-77
- मध्य प्रदेश : महत्वपूर्ण योजनाएँ 78-83
- मध्य प्रदेश : आर्थिकी-बजट 84-89
- मध्य प्रदेश : समसामायिकी 90-97
- मध्य प्रदेश : अति महत्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तथ्य 98-111
- मध्य प्रदेश : पी.सी.एस. की पूर्व परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्न 112-176

01.

मध्य प्रदेश : संक्षिप्त अवलोकन

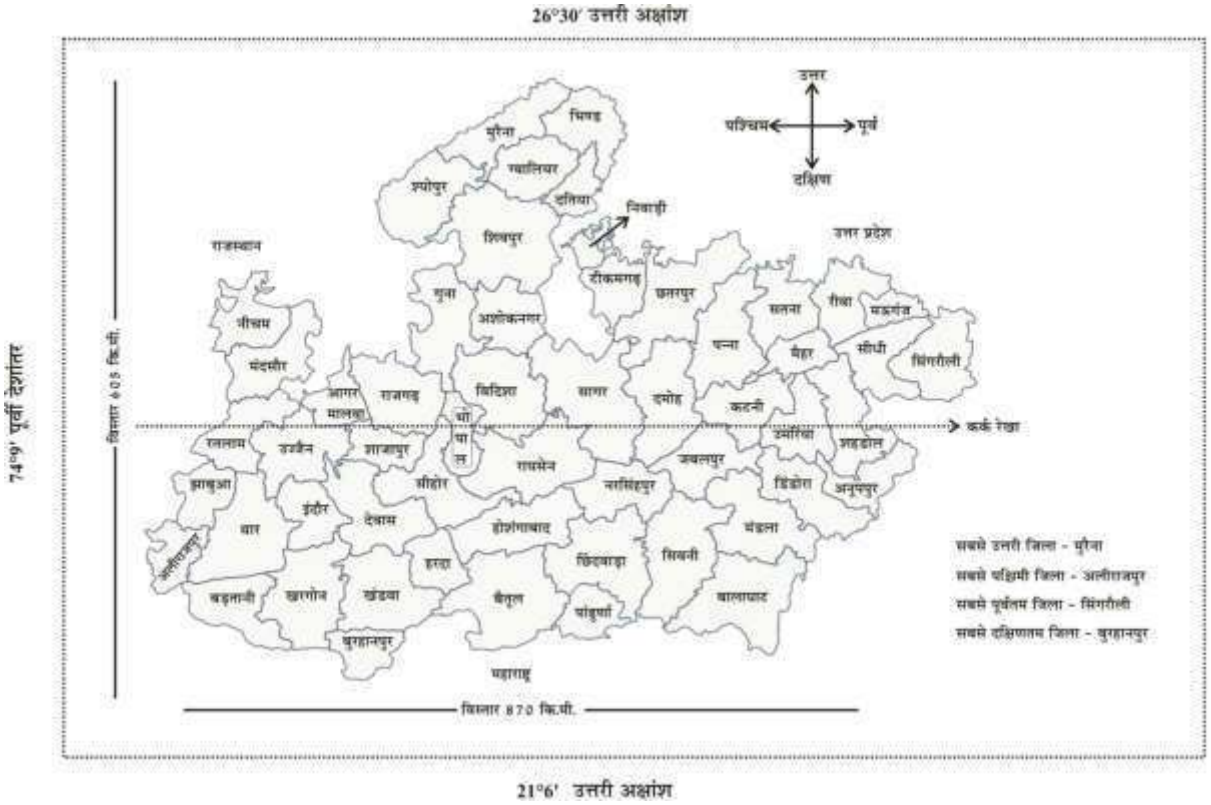

स्थापना	–	1 नवम्बर, 1956
नामकरण	–	भारत के मध्य भाग में स्थित होने के आधार पर 'मध्य प्रदेश' नाम पड़ा। अन्य नामों में 'भारत का हृदय प्रदेश' नदियों का मायका, सोयाबीन राज्य, तेंदुआ राज्य, 'कोहिनूर प्रदेश' व सेन्ट्रल प्रोविसेंस है।
राजधानी	–	भोपाल

भौगोलिक

अवस्थिति (अक्षांशीय विस्तार)	–	21° 6' उत्तरी अक्षांश से 26° 30' उत्तरी अक्षांश तथा 74° 9' पूर्वी देशान्तर से 82° 48' पूर्वी देशान्तर
क्षेत्रफल	–	308252 वर्ग किलोमीटर
उत्तर से दक्षिण	–	605 किमी.
पूर्व से पश्चिम	–	870 किमी.
सीमावर्ती राज्य	–	(5) उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, छत्तीसगढ़, राजस्थान और गुजरात
सबसे पूर्वी जिला	–	सिंगरौली
सबसे पश्चिमी जिला	–	अलीराजपुर
सबसे उत्तरी जिला	–	मुरैना
सबसे दक्षिणी जिला	–	बुरहानपुर

राजनीतिक

पुनर्गठन	–	1 नवम्बर 2000
कुल लोकसभा सीटें	–	29
लोकसभा में सुरक्षित सीटें	–	अनुसूचित जाति-4, अनुसूचित जनजाति-6
राज्य सभा सीटें	–	11
विधानसभा सदस्यों की संख्या	–	230
सर्वाधिक विधानसभा सीटों वाला जिला	–	इंदौर - 9 विधानसभा सीटें
सबसे बड़ा (जनसंख्या में) संसदीय क्षेत्र	–	इंदौर (23 लाख 17 हजार 191 मतदाता)
सबसे कम विधानसभा सीटों वाले जिले (2 सीटें)	–	उमरिया, शाजापुर, हरदा, बुरहानपुर, अलीराजपुर, आगरमालवा, डिंडोरी, निवाड़ी
प्रदेश का सबसे छोटा (जनसंख्या) संसदीय क्षेत्र	–	छिंदवाड़ा (15 लाख पाँच हजार 267 मतदाता)
विधानसभा में सुरक्षित सीटें	–	अनुसूचित जाति - 35, अनुसूचित जनजाति - 47, (कुल – 82)

वर्तमान : पद नियुक्ति

राज्यपाल	**श्री मंगूभाई छगनभाई पटेल**
मुख्यमंत्री	**डॉ. मोहन यादव**
विधानसभा अध्यक्ष	**श्री नरेन्द्र सिंह तोमर**
उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश	**जस्टिस सुरेश कुमार कैत**
राज्य लोकायुक्त	**श्री सत्येन्द्र कुमार सिंह**
राज्य निर्वाचन आयोग के अध्यक्ष	**श्री बसन्त प्रताप सिंह**
राज्य मुख्य सूचना आयुक्त	**श्री विजय यादव**

न्यायिक

उच्च न्यायालय गठन	–	1956 (जबलपुर)
उच्च न्यायालय की खंडपीठ	–	ग्वालियर, इंदौर

प्रशासनिक

जिलें	–	55 (नया जिला- मऊगंज, पांढुर्णा, मैहर)
तहसीलें	–	436
विकास खंड	–	313
आदिवासी विकास खंड	–	89
कुल नगर	–	476
नगर निगम	–	17 (17वाँ, भिण्ड, 18वाँ दतिया संभावित)
नगर पालिकायें	–	99
पुलिस परिक्षेत्रों की संख्या (आई.जी. पुलिस)	–	11
पुलिस परिक्षेत्रों की संख्या (डी.आई.जी. पुलिस)	–	15
कुल ग्राम	–	54903

प्राकृतिक

जलवायु	–	म.प्र. उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु क्षेत्र में स्थित है तथा यहाँ उष्णकटिबंधीय मानसूनी जलवायु पाई जाती है। जलवायु के आधार पर मध्य प्रदेश को चार भागों में बांटा गया है।
ऋतुएं	–	जलवायु के आधार पर ऋतुओं को तीन भागों में बांटा गया है। ग्रीष्म ऋतु (15 मार्च से 15 जून), वर्षा ऋतु (16 जून से 15 अक्टूबर) और शीत ऋतु (15 अक्टूबर से 15 मार्च)।
प्राकृतिक प्रदेश	–	मध्य भारत का पठार, बुंदेलखण्ड का पठार, रीवां का पठार, मालवा का पठार, नर्मदा घाटी बेसिन, सतपुड़ा मैकाल पर्वत प्रदेश आदि में प्राकृतिक रूप से प्रदेश विभाजित है।
प्रमुख नदियाँ	–	नर्मदा, चम्बल, ताप्ती (सूर्यपुत्री), सोन, बेतवा, क्षिप्रा, वैनगंगा, केन (को शुक्तिमती नाम से जाना जाता है), टोंस, तवा आदि।
कुल अभिलिखित वन (ISFR-2021)	–	भौगोलिक क्षेत्रफल का 30.72% (94689 वर्ग किमी.)
वनावरण के अंतर्गत क्षेत्रफल	–	कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 25.14% (77,492.6 वर्ग किमी.)
राज्य में वृच्छादन	–	कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 2.62% (8073 वर्ग किमी.)
राज्य में वन एवं वृच्छादन	–	कुल क्षेत्रफल का 27.73% (85487 वर्ग किमी.)
वनों के प्रकार		उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन, उष्ण कटिबंधीय अर्द्धपर्णपाती वन और उष्ण कटिबंधी शुष्क पर्णपाती वन।
प्रमुख वन्य जीव	–	दुर्लभ एवं लुप्तप्राय प्रजातियों में एक बाघ, नदी डाल्फिन, घड़ियाल, तेंदुआ, गौर बारहसिंगा, काला हिरण, खरमौर, सोन चिड़िया आदि।

अन्य

प्रमुख लोकनृत्य	–	मटकी, गणगौर, बधाई, बरेडी, नौराता, भगौरिया
प्रमुख लोकगीत	–	आल्हा, लावनी, चौगाडियां फाग, रेलो
प्रमुख पर्यटन स्थल	–	पंचमढ़ी, भेड़ाघाट, कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, बांधवगढ़
प्रमुख तीर्थस्थल	–	उज्जैन, महेश्वर, अमरकंटक, ओंकारेश्वर
प्रमुख लोकवाद्य	–	ताल वाद्य (झांझ, थापी), फूंक वाद्य (बांस द्वारा), घर्षण वाद्य (खरखरा), धर्म वाद्य
प्रमुख मंदिर	–	खजुराहो, ओरछा, भोजपुर, उदयपुर
प्रमुख गुफायें	–	उदयगिरि, बाघ, भृतहरि कबरा, बिलौबा, केवटी कुण्ड, भीमबेटका
प्रमुख बोली	–	खड़ी हिन्दी, बुंदेलखण्डी, बघेलखण्डी, मालवी, हिन्दी राजस्थानी मिश्रित, उर्दू हिन्दी मिश्रित, निमाड़ी, ब्रजभाषा, कोरकू
प्रमुख ऐतिहासिक स्थल	–	मांडू, दतिया, चंदेरी, जबलपुर, ओरछा, रायसेन, सांची, विदिशा, उदयगिरि, भीमबेटका, इंदौर, भोपाल

मध्य प्रदेश : राजकीय प्रतीक

भाषा	–	हिन्दी
चिन्ह	–	यह वृत्ताकार आकृति का है, जिसके बीच एक बरगद का वृक्ष तथा बीचों-बीच भारत का राष्ट्रीय चिन्ह अंकित है। इस वृत्ताकार आकृति को 24 छोटे-छोटे स्तूप आकृति की श्रृंखला से घेरा गया है और पार्श्व में गेहूँ और धान की बालियाँ दशाई गई है। इस वृत्ताकार चिन्ह में ऊपर मध्य प्रदेश शासन और नीचे सत्यमेव जयते लिखा है।

पुष्प	–	सफेद लिली
पशु	–	बारहसिंगा (ब्रेडरी प्रजाति)
पक्षी	–	दूधराज या शाह बुलबुल (वैज्ञानिक नाम–फाइकस वेनगैलेंसिस)
वृक्ष	–	बरगद (वट वृक्ष)
खेल	–	मलखम्ब
नृत्य	–	राई (बुन्देलखण्ड क्षेत्र)
राज्य दिवस	–	1 नवम्बर
राजकीय फसल	–	सोयाबीन (मध्य प्रदेश को सोया स्टेट भी कहते हैं)
राजकीय मछली	–	महाशीर
राजकीय नाट्य	–	माच (मालवा क्षेत्र)
राजकीय गान	–	सुख का दाता, सबका साथी, शुभ का यह संदेश है। माँ की गोद, पिता का आश्रय, मेरा मध्य प्रदेश।।
राजकीय फल	–	आम

मध्य प्रदेश में प्रथम

राज्यपाल	–	बी. पट्टाभि सीतारमैय्या
मुख्यमंत्री	–	पं. रविशंकर शुक्ल
विधानसभा अध्यक्ष	–	पं. कुंजीलाल दुबे
प्रथम महिला राज्यपाल	–	सुश्री सरला ग्रेवाल
प्रथम महिला मुख्यमंत्री	–	सुश्री उमा भारती
प्रथम राज्य निर्वाचन आयुक्त	–	एन.वी. लोहानी
प्रथम महिला मुख्य न्यायाधीश	–	श्रीमती सरोजनी सक्सेना
प्रथम राज्य सूचना आयुक्त	–	टी.एन. श्रीवास्तव
प्रथम आकाशवाणी केन्द्र	–	इंदौर (1955)
प्रथम विश्वविद्यालय	–	डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय (सागर)
प्रथम चिकित्सा विश्वविद्यालय	–	गजरा राजा चिकित्सा महाविद्यालय (ग्वालियर)
प्रथम कृषि विश्वविद्यालय	–	जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय (जबलपुर)

संभाग में शामिल जिलें

इंदौर (8)	जबलपुर (9)	उज्जैन (7)	सागर (6)	ग्वालियर (5)	भोपाल (5)	रीवां (6)	चम्बल (3)	शहडोल (3)	नर्मदापुरम (3)
इन्दौर	जबलपुर	उज्जैन	सागर	ग्वालियर	भोपाल	रीवां	मुरैना	शहडोल	होशंगाबाद
धार	कटनी	देवास	दमोह	शिवपुरी	सीहोर	सीधी	श्योपुर	अनूपपुर	हरदा
खरगौन	नरसिंहपुर	रतलाम	पन्ना	गुना	रायसेन	सिंगरौली	भिण्ड	उमरिया	बैतूल
बड़वानी	छिंदवाड़ा	शाजापुर	छतरपुर	अशोकनगर	राजगढ़	सतना			
झाबुआ	शिवनी	आगर मालवा	टीकमगढ़	दतिया	विदिशा	मऊगंज			
अलीराजपुर	मण्डला	मंदसौर	निवाड़ी			मैहर			
खण्डवा	बालाघाट	नीमच							
बुरहानपुर	डिंडोरी								
	पांढुर्णा								

02.

मध्य प्रदेश : भौतिक विन्यास

भारत के केन्द्र में स्थित मध्य प्रदेश, भारत के उत्तर–मध्य हिस्से में बसा प्रायद्वीपीय पठार का एक भाग है। इसकी उत्तरी सीमा पर गंगा–यमुना के मैदानी इलाके हैं, पश्चिम में अरावली, पूर्व में छत्तीसगढ़ का मैदानी क्षेत्र तथा दक्षिण में ताप्ती घाटी व महाराष्ट्र के पठार हैं। 3,08,252 वर्ग किमी. क्षेत्र में बसा मध्य प्रदेश भारत का दूसरा सबसे बड़ा राज्य है। मध्य प्रदेश के अधिकांश भाग में उच्च भूमि पायी जाती है, जिसकी औसत ऊँचाई 300 मीटर है, जिसकी भौतिक संरचना में पर्वत, पठार, झील, मैदान आदि सभी प्रकार की स्थलाकृतियाँ पायी जाती हैं।

भौतिक विन्यास की दृष्टि से मध्य प्रदेश को तीन प्राकृतिक भौगोलिक क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है–

मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (घाटी के उत्तर में)	सतपुड़ा-मैकल पर्वतमाला (दक्षिण में)	पूर्वी पठार (दक्षिण पूर्व में)
↓	↓	↓
मध्य भारत का पठार	पश्चिम सतपुड़ा श्रेणी	बघेलखण्ड
मालवा पठार	सतपुड़ा मध्य श्रेणी	
बुंदेलखण्ड पठार	मैकल श्रेणी	
नर्मदा सोन घाटी		
रीवा पन्ना पठार		

मध्य भारत का पठार–

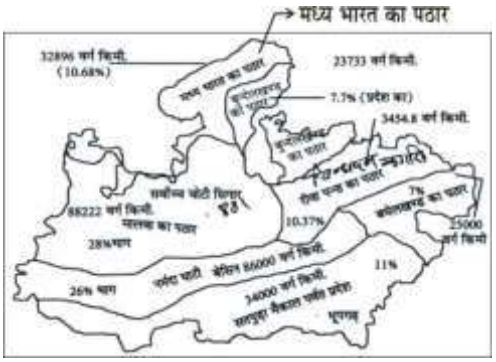

राज्य के मध्य पहाड़ी क्षेत्र नर्मदा सोन घाटी और अरावली पर्वतमाला के मध्य त्रिकोणीय रूप से पश्चिम में विस्तृत हैं। यह 24° से 26°48' उत्तरी अक्षांश व 74°50' से 79°10' पूर्वी देशांतर तक विस्तृत है, जिसका क्षेत्रफल 32896 वर्ग किमी. है। यह प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 10.7% है। इसके अंतर्गत ग्वालियर, शिवपुरी, मुरैना, भिण्ड, श्योपुर, मंदसौर, नीमच व गुना जिले आते हैं।

यह पठार मुख्यतः मध्य प्रदेश के पश्चिमोत्तर भाग में अवस्थित है, जो कि राजस्थान व उत्तर प्रदेश से जुड़ा हुआ है। प्रसिद्ध चम्बल घाटी इसी का भाग है। यह पठारी क्षेत्र जलोढ़ मिट्टी से आच्छादित है। यहाँ कृषि के साथ–साथ उद्योग भी पर्याप्त मात्रा में है। इस में वनों की अत्यधिक कटाई के कारण इसके उत्तरी क्षेत्र का अपरदन सबसे अधिक हुआ, जिससे यह क्षेत्र भारत के सबसे बड़े बीहड़ क्षेत्र में परिवर्तित हो गया है।

बुन्देलखण्ड का पठार–

यह पठारी क्षेत्र 24°10' उत्तरी अक्षांश से 26°22' उत्तरी अक्षांश व 77°51' पूर्वी देशांतर से 80°20' पूर्वी देशांतर तक विस्तृत है। इसका कुल क्षेत्रफल 23733 वर्ग किमी. है जोकि प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र का 7.70% है। इस पठार का निर्माण प्रीक्रैम्बियन युग में माना जाता है। इसके अंतर्गत मध्य प्रदेश के साथ ही उत्तर प्रदेश के भी कुछ जिले हैं। यहाँ पर बलुई दोमट मिट्टी पायी जाती है, जोकि लाल व काली मिट्टी के सम्मिश्रण से बनी है। बुन्देलखण्ड पठार का कुछ भाग समतल प्राय मैदान है तथा इसका ढाल उत्तर की ओर है तथा यह ग्रेनाइट व नीस चट्टानों से निर्मित है यह पठार अर्द्धचन्द्राकार है। यह पन्ना श्रेणी, विजावर श्रेणी तथा चंदेरी पाट से घिरा है। इस क्षेत्र में नरहट कगार भी स्थित है। इस क्षेत्र में प्रवाहित होने वाली नदियों (धसान, केन तथा बेतवा आदि) ने सँकरी घाटियों, जलप्रपात, कगार एवं खड्डों आदि का निर्माण किया है।

मालवा का पठार–

यह लावा मिट्टी से निर्मित पठार है। इसका क्षेत्रफल 88222.2 वर्ग किमी. है जो मध्य प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 28.62% है। नर्मदा घाटी के उत्तर में विन्ध्याचल श्रेणी से पूर्व में अशोकनगर से पश्चिम में, मंदसौर तक 74°17' से 79°20' पूर्वी देशांतर व 20°17' से 25°8' उत्तरी अक्षांश के मध्य स्थित है। इस पठारी क्षेत्र में दो अपवाह तंत्रों का विकास हुआ है।

(i) चम्बल, सिन्ध, बेतवा आदि नदियाँ उत्तर की ओर प्रवाहित होती हुई यमुना नदी में मिल जाती हैं।

(ii) माही, नर्मदा तथा तापी नदियाँ पश्चिम की ओर प्रवाहित होती है जो अरब सागर में मिल जाती हैं।

मालवा पठार की औसत ऊँचाई लगभग 500 मीटर है। इस क्षेत्र में स्थित पहाड़ियाँ सिगार चोटी (881 मी.), जनापाव (854 मी.), गोमनपुर चोटी (510) प्रमुख है। मध्यप्रदेश की अधिकांश नदियाँ यहीं से निकलती हैं। इसलिए इसे नदियों का मायका कहा जाता है। कर्क रेखा मालवा पठार के मध्य से होकर गुजरती है। मालवा का पठार नर्मदा व चंबल के मध्य जल विभाजक का कार्य करता है।

इसके अंतर्गत आने वाले प्रमुख जिले हैं– मंदसौर, उज्जैन, इंदौर, भोपाल, धार, विदिशा, रायसेन, सागर, अलीराजपुर, गुना आदि।

नर्मदा सोन घाटी–

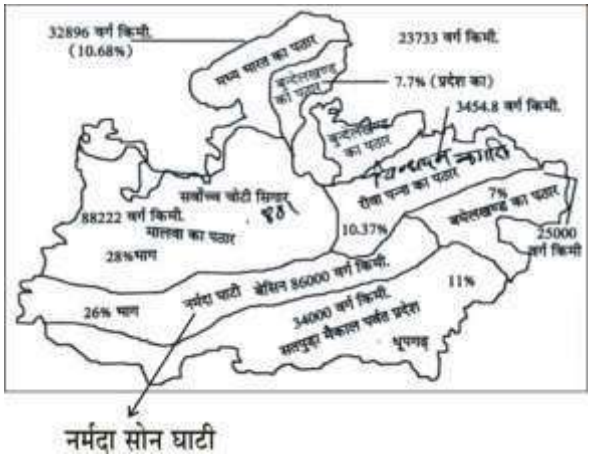

इसका निर्माण दक्कन ट्रैप शैलों से हुआ है। इसका क्षेत्रफल 86000 वर्ग किमी. है। यह प्रदेश का सर्वाधिक नीचा भाग है। इसका विस्तार मध्य प्रदेश के पश्चिमी भाग से लेकर उत्तर पूर्व तक नर्मदा तथा सोन नदी के संकरी घाटी के मध्य तक है। यह 22°30' से 23°45' उत्तरी अक्षांश तक तथा 74° पूर्वी देशांतर से 81°30' के मध्य स्थित है। इसमे विषम स्थलाकृतियों व उच्चावच में भिन्नता होने के कारण नदियों ने अनेक जलप्रपातों का निर्माण किया है। यह राज्य के कुल भू-भाग का 26% है। यह क्षेत्र कृषि उत्पादन में मालवा पठार के बाद दूसरा सबसे समृद्ध क्षेत्र है।

इसके उत्तरी भाग में निचले दक्कन ट्रैप तथा दक्षिणी भाग में ऊपरी दक्कन ट्रैप की चट्टानें पायी जाती हैं। इस नदी घाटी में आर्कियन काल से होलोसीन काल तक की चट्टाने पायी जाती हैं। नर्मदा नदी की सहायक नदियाँ जो दांये तरफ मिलती हैं हिरण, तिनदोनी, बारना, चंदकेशर, कॉनर, मान, हथनी तथा ऊरी आदि हैं तथा बाँये तट की सहायक नदियाँ शक्कर, वरनार, दुधी, तवा तथा गंजाल आदि हैं।

इसके अंतर्गत आने वाले प्रमुख जिले हैं– कटनी, जबलपुर, होशंगाबाद, खण्डवा, सीधी।

रीवा–पन्ना पठार या विंध्यन कगार प्रदेश–

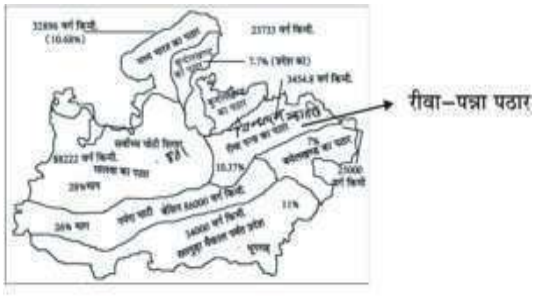

इसे विंध्य का पठारी प्रदेश या विंध्यन कगार प्रदेश भी कहा जाता है। रीवा-पन्ना पठार का निर्माण आर्कियन चट्टानों के अपक्षय और अपरदन के फलस्वरूप अवसादीकरण से हुआ है। इसमें भूगर्भिक हलचलों से कगार, दरार तथा भ्रंश आदि स्थलाकृतियों का निर्माण हुआ है। इसका क्षेत्रफल 31954.8 वर्ग किमी. है जो प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 10.37% है। इसका विस्तार उत्तर में 23°10' से 25°12' उत्तरी अक्षांश तथा 78°4' से 82°48' पूर्वी देशांतर तक है। इस पठार का मध्य भाग समतल है, जिसे दमोह पठार कहते हैं। इसमें चूना पत्थर, क्वाट्र्जाइट तथा बालू पत्थर आदि के निक्षेप पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में चचाई जलप्रपात, केवटी, बहुटी तथा पियावन आदि जल प्रपात स्थित है। इसके अंतर्गत आने वाले प्रमुख जिले पन्ना, सतना तथा रीवा हैं।

सतपुड़ा–मैकल पर्वतमाला–

यहाँ पर दक्कन ट्रैप शैलें पाई जाती हैं। इसका विस्तार मध्य प्रदेश के दक्षिण भाग में नर्मदा घाटी क्षेत्र में तथा विंध्याचल पर्वत के दक्षिण भाग में स्थित है, जिसका अक्षांशीय विस्तार 21^0 से $23^03'$ उत्तरी अक्षांश तथा देशांतरीय विस्तार 74^0 से 81^0 पूर्वी देशांतर है। इसका क्षेत्रफल 34000 वर्ग किमी. है जो प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का 11% है। इस क्षेत्र से नर्मदा, ताप्ती तथा गोदावरी आदि प्रमुख नदियों के अतिरिक्त वेनगंगा, शक्कर, गार, छोटी तवा और वर्धा आदि नदियाँ भी प्रवाहित होती है। इस श्रेणी में अमरकंटक पठार से नर्मदा, सोन, जोहिला नदी का उद्गम होता है। इस क्षेत्र से सर्वाधिक नदियों का उद्गम होता है इसलिए इसे 'वाटर शेड' भी कहते हैं। इस पहाड़ी पर पंचमढ़ी पर्वत शिखर स्थित है, जिसे 'सतपुड़ा की रानी' कहते हैं। इस पर्वत श्रृंखला की सबसे ऊँची चोटी धूपगढ़ है। इसके अंतर्गत आने वाले प्रमुख जिले हैं– खण्डवा, होशंगाबाद, सिवनी, मंडला, छिंदवाड़ा आदि। इसे पुनः 3 अन्य भागों में विभाजित किया जाता है।

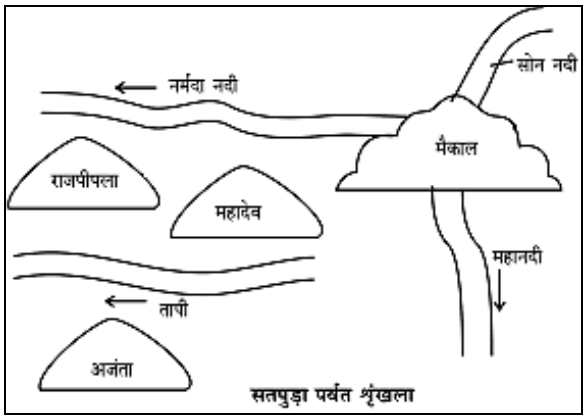

(i) पश्चिमी सतपुड़ा श्रेणी या राजपीपला श्रेणी–

यह सतपुड़ा श्रेणी के पश्चिम में बुरहानपुर दर्रे तक विस्तृत है। यह मुख्यतः पूर्वी गुजरात के राजपीपला शहर के चारों तरफ स्थित है। इसमें नुकीले शिखर, खड़े ढाल, कगार तथा भ्रंश आदि पाये जाते हैं। यहा स्थित चट्टानें दक्कन लावा के पठार का भाग है। इस क्षेत्र में असीरगढ़ पहाड़ी तथा नर्मदा नदी के मध्य में निमाड़ का मैदान स्थित है।

(ii) सतपुड़ा मध्य श्रेणी–

यह दक्षिणी मध्य प्रदेश में स्थित सतपुड़ा पर्वत के मध्य में स्थित है। इसके अंतर्गत ग्वालीघाट तथा महादेव श्रेणी आती है। मध्य प्रदेश की सर्वोच्च चोटी धूपगढ़ (1350 मी.) महादेव श्रेणी में ही स्थित है। यह श्रेणी आद्य महाकल्प और गोंडवाना काल के लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। यहाँ से नर्मदा नदी, वेनगंगा, वर्धा आदि नदियाँ निकलती हैं। यहाँ की पहाड़ियों में छोटे पठार और खड़ी ढलाने हैं। छिदवाड़ा के पास पेंच घाटी से कोयला मिलता है।

(iii) मैकाल श्रेणी–

यह सतपुड़ा श्रेणी का पूर्वी भाग है और मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के मध्य स्थित है। इसकी आकृति अर्द्धचन्द्राकार है। इसका निर्माण आर्कियन और गोडवाना काल की चट्टानों से हुआ है। नर्मदा, सोन आदि नदियों का उद्गम भी यहीं से होता है। यहाँ कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, अचानकमार, अमरकंटक जैवमण्डल आरक्षित क्षेत्र एवं अन्य आरक्षित क्षेत्र स्थित है।

पूर्वी पठार (बघेलखण्ड)–

इसका निर्माण गोण्डवाना क्रम के चट्टानों से हुआ है। बघेलखण्ड पठार के निर्माण में आर्कियन काल से लेकर जुरैसिक काल तक के शैल समूह पाये जाते हैं। इस पठारी भाग में गोंडवाना क्रम की चट्टानें अधिक हैं। इस क्षेत्र में सिंगरौली कोयला क्षेत्र मध्यप्रदेश का दूसरा सबसे बड़ा कोयला क्षेत्र है। जिसमें ग्रेनाइट, नीस, क्वाट्र्जाइट, चूना पत्थर, क्वाट्र्ज तथा कांग्लोमरेट आदि पाया जाता हैं। यहाँ से सोन, रिहन्द तथा गोपद आदि नदियाँ प्रवाहित होती है। यह मध्य प्रदेश के दक्षिण पूर्वी भाग में स्थित हैं जिसका अक्षांशीय विस्तार $23^o40'$ से $82^o35'$ उत्तरी अक्षांश तथा देशांतरीय विस्तार $80^o05'$ से $82^o48'$ पूर्वी देशांतर है। इसका क्षेत्रफल लगभग 2600 वर्ग किमी है, जो प्रदेश के कुल क्षेत्रफल का लगभग 8% है। इसके अंतर्गत आने वाले प्रमुख जिले हैं– जबलपुर, उमरिया, सिंगलौरी, शहडोल आदि।

03.

मध्य प्रदेश : जलवायु एवं मिट्टी

जलवायु–किसी भी क्षेत्र में लम्बे समय तक पायी जाने वाली ताप, वर्षा, वायु, आर्द्रता आदि की मात्रा, अवस्था तथा गति का औसत रूप में पाया जाना वहाँ की जलवायु कहलाती है।

जलवायु के आधार पर मध्य प्रदेश को चार भाँगों में बाँटा गया है–

1. मालवा पठार क्षेत्र
2. उत्तर का मैदानी क्षेत्र
3. विन्ध्य पर्वतीय क्षेत्र
4. नर्मदा घाटी क्षेत्र

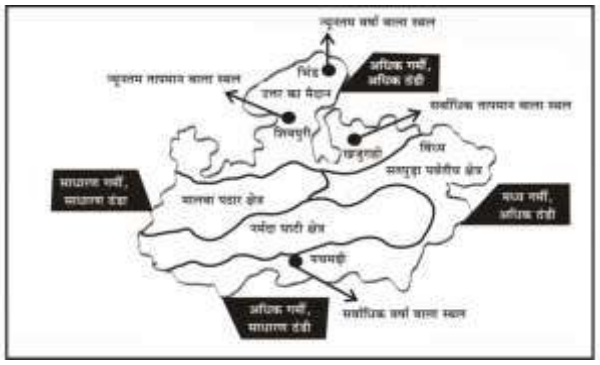

मालवा पठार क्षेत्र–इस प्रदेश की जलवायु का स्वरूप मोटे तौर पर उष्ण कटिबन्धीय मानसूनी जलवायु की अपेक्षा थोड़ा–सा महाद्वीपीय रूप है। इसमें ग्रीष्म ऋतु सामान्य गर्म तथा शीत ऋतु सामान्य ठण्डी होती है। इस क्षेत्र का गर्मियों में औसतन ताप 40^{o} से 42.5^{o} C तथा सर्दियों में 10^{o} से 12.5^{o} C होता है। इस क्षेत्र में सबसे अधिक गर्म महीना मई का होता है। अधिकतर वर्षा अरब सागर के मानसूनों से होती है।

उत्तर का मैदानी क्षेत्र–इस क्षेत्र की जलवायु महाद्वीपीय प्रकार की है। समुद्र से दूर स्थित होने के कारण इस क्षेत्र में गर्मियों में अधिक गर्मी तथा सर्दियों में अधिक सर्दी पड़ती है। गर्मियों में औसत तापमान 40^{o} से 45.5^{o} C तथा सर्दियों में 15^{o} से 180^{o} C तक रहता है। इस क्षेत्र में वर्षा 75 सेमी. से कम होती है। जिससे यह क्षेत्र उप–आर्द्र प्रदेश की श्रेणी में आता है।

विन्ध्य पर्वतीय क्षेत्र–इस क्षेत्र में सम जलवायु पायी जाती है। पर्वतीय क्षेत्र में गर्मी अधिक नहीं पड़ती है तथा सर्दी सामान्य रहती है। यही कारण है कि यह क्षेत्र स्वास्थ्य की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है।

नर्मदा घाटी क्षेत्र–नर्मदा घाटी क्षेत्र कर्क रेखा के अधिक नजदीक है। जिससे इस क्षेत्र में ग्रीष्म ऋतु अत्यधिक गर्म तथा शीत ऋतु साधारण ठण्डी रहती है। इस क्षेत्र में अधिकतम औसत दैनिक तापमान मई में तथा न्यूनतम तापमान दिसम्बर में रहता है। वर्षा पूर्वी क्षेत्र में 142.5 सेमी. से लेकर पश्चिमी क्षेत्रों में 57.5 सेमी. तक होती है।

जलवायु के विशेष तथ्य–

- मध्य प्रदेश में सर्वाधिक वर्षा पंचमढ़ी में होती है।
- मध्य प्रदेश में न्यूनतम वर्षा भिण्ड (गोहद) जिले में होती है।
- मध्य प्रदेश में ऋतु वेधशाला इन्दौर में स्थित है।
- मध्य प्रदेश के विन्ध्य क्षेत्र में बंगाल की खाड़ी एवं अरबसागर दोनों मानसूनों से वर्षा होती है।
- मध्य प्रदेश की जलवायु को उष्णकटिबंधीय स्वरूप प्रदान करने के लिए प्रदेश के मध्य से गुजरने वाली 'कर्क रेखा' उत्तरदायी है। जबकि दक्षिण–पश्चिम मानसून से प्राप्त होने वाली वर्षा इसे मानसूनी जलवायु का स्वरूप प्रदान करती है।
- सबसे कम तापमान शिवपुरी का मापा गया।
- कर्क रेखा मध्य प्रदेश के मध्य भागों में स्थित 14 जिलों से होकर गुजरती है, जो इस प्रकार है– रतलाम, उज्जैन, आगर–मालवा, राजगढ़, सीहोर, भोपाल, विदिशा, रायसेन, सागर, दमोह, कटनी, जबलपुर, उमरिया तथा शहडोल।
- भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले सभी कारकों का प्रभाव, मध्य प्रदेश की जलवायु पर भी पड़ता है।

ऋतुएँ–मध्य प्रदेश की ऋतुओं को जलवायु के आधार पर निम्न तीन भागों में विभाजित किया जाता है–

(1) ग्रीष्म ऋतु
(2) वर्षा ऋतु
(3) शीत ऋतु

ग्रीष्म ऋतु

- प्रदेश में ग्रीष्म ऋतु मार्च से प्रारम्भ होकर मध्य जून तक रहती है।
- मध्य प्रदेश राज्य का सबसे गर्म स्थान भिण्ड है।
- मानसून के आगमन से पूर्व बंगाल की खाड़ी में स्थानीय विक्षोभ के कारण मई माह में विनाशकारी चक्रवात विकसित हो जाते हैं।
- मई माह में मध्य प्रदेश के उत्तरी भागों में शुष्क व गर्म पछुआ पवने चलती हैं, जिन्हें लू कहते हैं।

वर्षा ऋतु

- प्रदेश में वर्षा ऋतु मध्य जून से शुरू होकर अंतिम सितम्बर तक रहती है।
- जुलाई माह में सम्पूर्ण पूर्वी मध्य प्रदेश में अधिक वर्षा होती है। जबकि पश्चिम की ओर जाने पर वर्षा में क्रमशः कमी आती जाती है।
- पठारी तथा पहाड़ी भागों में अपेक्षाकृत अधिक वर्षा होती है। क्योंकि ऐसे स्थलों की ऊँचाई अधिक होती है।
- सितम्बर–अक्टूबर के समय को गर्मी की द्वितीय ऋतु कहा जाता है।

शीत ऋतु

- मध्य प्रदेश में शीत ऋतु का काल नवम्बर से फरवरी के बीच होता है।
- दिसम्बर – जनवरी के महीनों में पश्चिमी विक्षोभ से मध्य प्रदेश के उत्तरी–पश्चिमी भागों में हल्की वर्षा होती है। इसे मावठ कहते हैं। इस वर्षा की वजह से शीत की प्रबलता बढ़ जाती है।

वर्षा वितरण

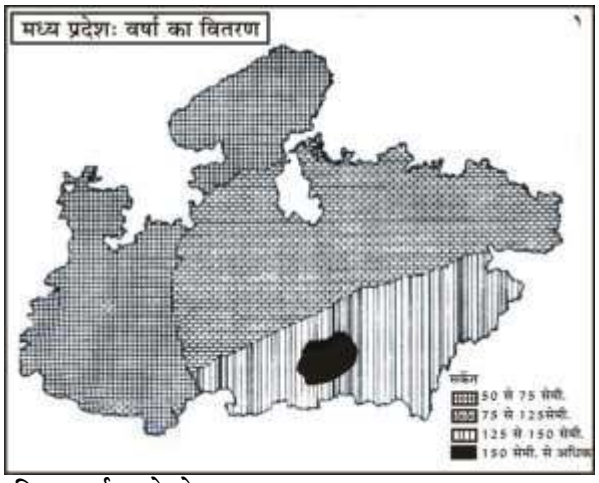

अधिक वर्षा वाले क्षेत्र

इस क्षेत्र में स्थित पंचमढ़ी, महादेव पर्वत, मण्डला, सीधी तथा बालाघाट में अधिक वर्षा होती है। अधिक वर्षा का प्रमुख कारण नर्मदा घाटी से आने वाली अरब सागरीय मानसून शाखा से वर्षा होती है। यहाँ औसत वर्षा 150 सेमी. से 213 सेमी. तक होती है।

औसत वर्षा वाले क्षेत्र

मध्य प्रदेश के उत्तरी–पूर्वी जिले इस क्षेत्र में आते हैं। मध्य उच्च पठार, बुन्देलखण्ड का पठार, रीवा पन्ना पठार में औसत वर्षा होने का कारण वायुमण्डलीय आर्द्रता का कम होना एवं क्षेत्रीय स्थलाकृति का प्रभाव है यहाँ औसत वर्षा 75 सेमी. से 80 सेमी. के बीच होती है।

निम्न वर्षा वाले क्षेत्र

प्रदेश का पश्चिमी क्षेत्र निम्न वर्षा वाला क्षेत्र है। यहाँ औसत वर्षा 50 सेमी. से 75 सेमी. तक होती है। इस क्षेत्र में निम्न वर्षा होने का प्रमुख कारण मानसून का आर्द्रता से न्यून होना है। दक्षिणी–पूर्वी मानसून यहाँ तक पहुँचते–पहुँचते आर्द्रता रहित हो जाता है। मध्य प्रदेश के नीमच, मन्दसौर, रतलाम, धार, झाबुआ आदि जिले आते हैं।

मिट्टी

शैलों के विघटन एवं वियोजन से उत्पन्न ढीले एवं असंगठित भू–पदार्थों को मिट्टी कहते हैं। नदी घाटियों से अधिकतर मध्य प्रदेश में प्रौढ़ मिट्टी पायी जाती है। क्योंकि प्रदेश की मिट्टी की प्रवृत्ति का निर्धारण यहाँ पाई जाने वाली प्राचीन चट्टानों के द्वारा हुआ है। क्षेत्रीय कारकों के आधार पर मध्य प्रदेश की मिट्टी को निम्न पाँच भागों में बाँटा गया है।

1. काली मिट्टी
2. लाल–पीली मिट्टी
3. जलोढ़ मिट्टी
4. कछारी मिट्टी
5. मिश्रित मिट्टी

1. काली मिट्टी– काली मिट्टी बेसाल्ट नामक आग्नेय चट्टान के क्षरण से बनी है। यह मध्य प्रदेश में मालवा पठार, सतपुड़ा के कुछ भाग तथा नर्मदा घाटी में मिलती है। जिला स्तर पर यह मन्दसौर, रतलाम, झाबुआ, धार, खण्डवा, खरगौन, इन्दौर, देवास, सीहोर, उज्जैन, शाजापुर, राजगढ़, भोपाल, रायसेन, विदिशा, सागर, दमोह, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, बैतूल, छिन्दवाड़ा, सिवनी, गुना आदि जिले हैं। यह प्रदेश के लगभग 47.6% क्षेत्र में पायी जाती है। यह गहरे रंग की दोमट मिट्टी है, जो चीका एवं बालू के मिश्रण से बनती है। इसमें लोहा और चूने की मात्रा अधिक होने से इसका रंग काला होता है। कपास की कृषि के लिए यह अधिक उपयोगी है। इस मिट्टी में फास्फोरस, नाइट्रोजन तथा जैव तत्त्वों की कमी होती है। इस मिट्टी को तीन वर्गों में बाँटा गया है–

(i) गहरी काली मिट्टी
(ii) साधारण गहरी काली मिट्टी
(iii) छिछली काली मिट्टी

(i) गहरी काली मिट्टी–

यह मिट्टी मध्य प्रदेश में नर्मदा घाटी, मालवा एवं सतपुड़ा पठार के विस्तृत भागों में लगभग 1.4 लाख हेक्टेयर भूमि पर पायी जाती है। इसकी गहराई 1–2 मीटर है। प्रदेश में यह मिट्टी गेहूँ, तिलहन, चना तथा ज्वार की कृषि के लिए उपयोगी है।

(ii) साधारण गहरी काली मिट्टी–

यह मिट्टी प्रदेश के मालवा पठार, उत्तरी मध्य प्रदेश तथा निमाड़ क्षेत्र में लगभग 400 लाख एकड़ क्षेत्र में मिलती है। यह राज्य में सबसे अधिक क्षेत्रफल पर पायी जाती है। इसकी गहराई 15 सेमी. से 1 मी. होती है। यह गेहूँ, कपास, मूँगफली तथा ज्वार फसल के लिए उपयोगी है।

(iii) छिछली काली मिट्टी–

यह मिट्टी मुख्य रूप से छिन्दवाड़ा, सिवनी तथा बैतूल जिलों में पायी जाती है। राज्य में इसका क्षेत्रफल लगभग 75 लाख एकड़ है जो राज्य का 7.5% है। यह गेहूँ और चावल की खेती के लिए उपयोगी है।

2. लाल–पीली मिट्टी– लाल–पीली मिट्टी का निर्माण आर्कियन, धारवाड़ तथा गोण्डवाना चट्टानों के क्षरण से हुआ है। लाल–पीली साधारणतः साथ–साथ पायी जाती है। लाल रंग लोहे के ऑक्सीकरण तथा पीला रंग फेरिक ऑक्साइड के जलयोजन के कारण होता है। यह हल्की बलुई मिट्टी है जिसमें चूने की मात्रा होती है परन्तु निक्षालन के कारण इसमें ह्यूमस तथा नाइट्रोजन की कमी होती है। इसलिए इसमें उर्वरता कम पायी जाती है। प्रदेश में यह मिट्टी मुख्य रूप से मण्डला, बालाघाट, शहडोल तथा सीधी जिलों में पाई जाती है। बघेलखण्ड के लाल–पीली मिट्टी वाले क्षेत्रों में चावल की खेती की जाती है।

3. जलोढ़ मिट्टी– जलोढ़ मिट्टी का निर्माण बुन्देलखण्ड नीस तथा चम्बल द्वारा निक्षेपित पदार्थों से हुआ है। यह मिट्टी प्रदेश के मुरैना भिण्ड ग्वालियर तथा शिवपुरी जिलों में लगभग 30 लाख एकड़ क्षेत्रफल में फैली है। इस मिट्टी में नाइट्रोजन जैव तत्व तथा फास्फोरस की कमी होती है। बालू की अधिकता के कारण इस मृदा में अपरदन कम होता है। गेहूँ, कपास, गन्ना फसलों के लिए यह मिट्टी उपयुक्त है।

4. कछारी मिट्टी– कछारी मिट्टी का निर्माण नदियों द्वारा बाढ़ के सयम अपवाह क्षेत्र में निक्षेपित पदार्थों से हुआ है। प्रदेश में इस मिट्टी का विस्तार ग्वालियर, भिण्ड एवं मुरैना जिलों में है। यह मिट्टी गेहूँ, गन्ना तथा कपास की फसल के लिए उपयुक्त है।

5. मिश्रित मिट्टी– प्रदेश के अनेक क्षेत्रों में लाल, पीली एवं काली मिट्टी मिश्रित रूप में पाई जाती है। यह मिट्टी फास्फेट, नाइट्रोजन एवं कार्बनिक पदार्थों की कमी वाली कम उपजाऊ मिट्टी है। इस मिट्टी में मुख्य रूप से ज्वार, बाजरा जैसे मोटे अनाज पैदा किए जाते हैं।

स्मरणीय तथ्य

- काली मिट्टी को रेगुड़ मिट्टी कहते हैं।
- कछारी मिट्टी नदियों के अपवाह क्षेत्र में पायी जाती हैं।
- मिट्टी के अपक्षरण को रेंगती हुई मृत्यु कहा जाता है।
- बीहड़ की समस्या से प्रदेश के भिण्ड, श्योपुर एवं मुरैना जिले प्रभावित हैं।
- मध्य प्रदेश में सबसे अधिक क्षेत्र पर काली मिट्टी पायी जाती है।
- बांगर मिट्टी पुरानी जलोढ़ मिट्टी को कहते हैं।
- खादर मिट्टी नवीन जलोढ़ मिट्टी को कहते हैं।
- भावर मिट्टी कंकड़ युक्त जलोढ़ मिट्टी को कहते हैं।
- ऊसर मिट्टी को कल्लर भी कहा जाता है। यह नमकीन मिट्टी होती है।

मृदा अपरदन–अपरदन के विभिन्न कारकों द्वारा मिट्टी की सतह से मिट्टी के महीन कणों का कट–कट कर बहना मृदा अपरदन कहलाता है। चम्बल की घाटी तथा नर्मदा नदी के किनारे इस समस्या से अधिक ग्रस्त हैं। इस भाग में वनस्पति विहीन मृदा होने के कारण मानसूनी वर्षा अवनलिका अपरदन द्वारा भूमि का कटाव तेजी से करती है।

- मध्य प्रदेश का मुरैना जिला मृदा अपरदन से सर्वाधिक प्रभावित है।
- मध्य प्रदेश की चम्बल नदी सर्वाधिक मृदा अपरदन करती है।

मध्य प्रदेश की मिट्टियाँ

मिट्टी	मुख्य घटक	कमी	प्रकृति	मुख्य फसल
जलोढ़ मिट्टी	कार्बोनेट्स	फास्फोरस जैव तत्व	उदासीन	गेहूँ कपास गन्ना
लाल–पीली मिट्टी	लोहे के ऑक्साइड कैल्शियम	नाइट्रोजन ह्यूमस	अम्लीय से क्षारीय	चावल
गहरी काली मिट्टी	लोहा, चूना एवं अम्लीय HCl में घुलनशील तत्व	फास्फोरस नाइट्रोजन जैव तत्व	अम्लीय	गेहूँ तिलहन चना ज्वार
साधारण गहरी काली मिट्टी	लोहा, चूना एवं अम्लीय HCl में घुलनशील तत्व	फास्फोरस नाइट्रोजन जैव तत्व	अम्लीय	गेहूँ कपास मूँगफली ज्वार
छिछली काली मिट्टी	लोहा, चूना एवं अम्लीय HCl में घुलनशील तत्व	फास्फोरस नाइट्रोजन जैव तत्व	अम्लीय	गेहूँ चावल
कछार मिट्टी	–	फास्फोरस नाइट्रोजन	अम्लीय	गेहूँ कपास गन्ना
मिश्रित मिट्टी	–	फास्फेट नाइट्रोजन कार्बनिक पदार्थ	–	ज्वार बाजरा मोटे अनाज

04.

मध्य प्रदेश के वन, राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यजीव अभयारण्य

वन एवं वन संपदा की दृष्टि से मध्य प्रदेश एक सम्पन्न राज्य है। मध्य प्रदेश को वनों एवं बाघों का राज्य कहा जाता है। भारत राज्य वन स्थिति रिपोर्ट 2021 के अनुसार राज्य में कुल 77,492.60 वर्ग किमी. वन हैं जो देश में सर्वाधिक हैं तथा राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 25.14% है, जिसमें 62.6 हजार वर्ग किमी. (65.36%) आरक्षित वन, 31008 वर्ग किमी. (32.5%) संरक्षित वन तथा 1.9 हजार वर्ग किमी. (1.9%) अवर्गीकृत वन हैं।

■ मध्य प्रदेश में प्रमुख रूप से उष्ण कटिबंधीय वन पाये जाते हैं जिन्हें 4 आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है।

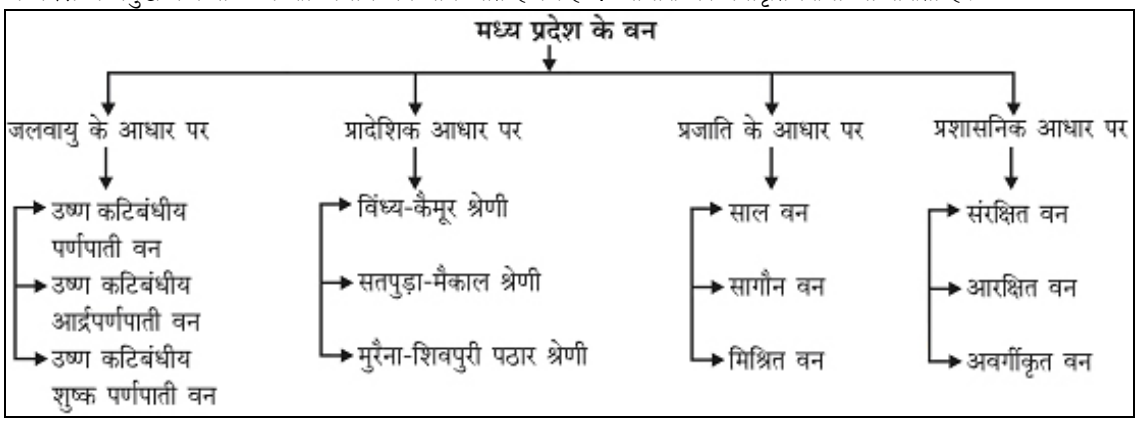

जलवायु के आधार पर वनों का वर्गीकरण

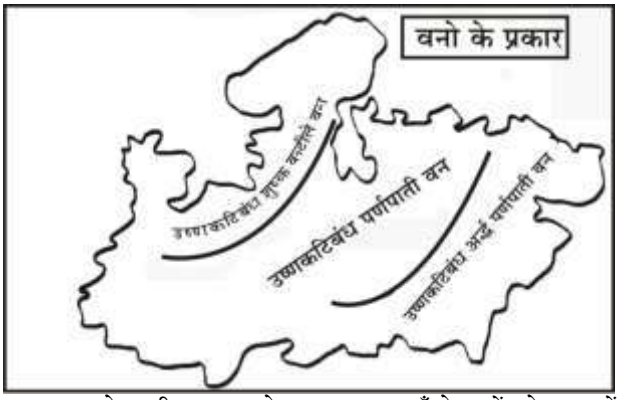

■ मध्य प्रदेश की जलवायु के आधार पर यहाँ के वनों को 3 भागों में वर्गीकृत किया गया है।

वनों का प्रकार	कुल वनावरण
■ उष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन	88.65%
■ उष्ण कटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन	8.97%
■ उष्ण कटिबंधीय कंटीले वन	0.26%

(i) उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन

■ उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन राज्य के उन क्षेत्रों में पाये जाते हैं। जहाँ औसत वार्षिक वर्षा 50 से 100 सेमी. के मध्य होती है।

■ इन वनों का विस्तार सागर, जबलपुर, उज्जैन, खण्डवा तथा खरगोन आदि में पाया जाता है जिनमें मुख्यतः सागौन, शीशम, नीम, पीपल आदि वृक्ष पाये जाते हैं।

(ii) उष्ण कटिबंधीय आर्द्रपर्णपाती वन

उष्ण कटिबंधीय आर्द्रपर्णपाती वन राज्य के उन क्षेत्रों में पाये जाते हैं जहाँ औसत वर्षा 100 से 150 c.m. के मध्य होती है।

■ इनका विस्तार मण्डला, बालाघाट, सीधी, शहडोल, डिंडोटी, उमरिया तथा अनूपपुर में पाया जाता है जिसमें मुख्यतः साल, बाँस, महुआ, बीजा, हर्रा आदि वृक्ष पाये जाते हैं।

(iii) उष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन

■ जहाँ राज्य के उन क्षेत्रों में 25 से 75 c.m. के मध्य वर्षा होती है वहाँ उष्ण कटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन पाये जाते हैं।

■ इन वनों का विस्तार श्योपुर, शिवपुरी, भिण्ड, मुरैना, रतलाम, मंदसौर, टीकमगढ़ व दतिया में पाया जाता है। जिसमें मुख्यतः बबूल, शीशम, हर्रा, पलॉश आदि वृक्ष पाये जाते हैं।

प्रादेशिक आधार पर वनों का वर्गीकरण

(i) विंध्य-कैमूर श्रेणी

ये वन क्षेत्र विंध्य-कैमूर श्रेणी में विरल वन के रूप में विस्तृत हैं जो दमोह तथा सागर जिलों में पाये जाते हैं।

(ii) सतपुड़ा-मैकल श्रेणी

■ इन वन क्षेत्र में सर्वाधिक वन पाये जाते हैं इन वनों का विस्तार सतपुड़ा-मैकाल श्रेणी के अन्तर्गत सिवनी, छिन्दवाड़ा एवं बालाघाट जिलों में पाये जाते हैं।

(iii) मुरैना-शिवपुरी पठार श्रेणी

■ इस वन क्षेत्र में सर्वाधिक कटीले व झाड़ी युक्त वन पाये जाते हैं। इन वनों का विस्तार शिवपुरी, भिण्ड व मुरैना जिलों में है।

प्रजाति के आधार पर वनों का वर्गीकरण

(i) साल वन

- मध्य प्रदेश राज्य में कुल वन क्षेत्र के 16.5% भाग पर साल वनों का विस्तार है।
- ये उष्ण कटिबंधीय आर्द्रपर्णपाती वन के वृक्ष हैं जो मध्य प्रदेश के पूर्वी भाग, रीवां, अनूपपुर, मण्डला, बालाघाट, उमरिया, सीधी, डिण्डोरी तथा शहडोल जिलों में पाये जाते हैं।

(ii) सागौन वन

- मध्य प्रदेश राज्य के कुल वन क्षेत्र के 17.88% भागों पर सागौन वनों का विस्तार है।
- ये उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन के वृक्ष हैं जो मध्य प्रदेश के दक्षिणी भागों के होशंगाबाद, बैतूल, छिन्दवाड़ा, दमोह, छतरपुर तथा पन्ना जिलों में पाये जाते हैं।

(iii) मिश्रित वन

- मध्य प्रदेश राज्य के कुल वन क्षेत्र के 59% भाग पर मिश्रित वन पाये जाते हैं।
- ये उष्ण कटिबंधीय मिश्रित पर्णपाती वन के वृक्ष हैं, जो मध्य प्रदेश के मुख्यतः बालाघाट, बैतूल, जबलपुर, सिवनी, मण्डला, सागर तथा भोपाल जिलों में पाये जाते हैं।

प्रशासनिक आधार पर वनों का वर्गीकरण

(i) आरक्षित वन

- ये वन राज्य सरकार के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में रहते हैं। इन वनों में लकड़ियों के एकत्रण तथा मवेशियों को चराने के लिए लोगों का प्रवेश वर्जित है।
- यह मध्य प्रदेश राज्य के कुल वन क्षेत्र का 65.36% है।
- मध्य प्रदेश के सर्वाधिक आरक्षित वन क्षेत्र खण्डवा वन वृत्त तथा न्यूनतम छतरपुर वन वृत्त में पाये जाते हैं।

(ii) संरक्षित वन

- ये वन राज्य सरकार के पूर्णतः नियंत्रण में रहते हैं, परन्तु स्थानीय लोगों को ईंधन के लिए लकड़ी एकत्र करने तथा मवेशियों को चराने की अनुमति होती है।
- यह मध्य प्रदेश राज्य के कुल वन क्षेत्र का 32.5% है।

(iii) अवर्गीकृत वन

- अवर्गीकृत वन क्षेत्र में वृक्षों को काटने तथा मवेशियों को चराने पर कोई प्रतिबंध नहीं होता है। राज्य में 1.9 हजार वर्ग किमी. क्षेत्र पर अवर्गीकृत वन पाये जाते हैं।
- मध्य प्रदेश राज्य के कुल वन क्षेत्र का 1.9% है।

वन स्थिति रिपोर्ट, 2021 के अनुसार मध्य प्रदेश की जिलेवार स्थिति–

सर्वाधिक एवं न्यूनतम वन क्षेत्र वाले शीर्ष 5 जिले

सर्वाधिक		न्यूनतम	
जिला	वनक्षेत्र	जिला	वनक्षेत्र
बालाघाट	4992 किमी.^{2}	उज्जैन	37 किमी.^{2}
छिंदवाड़ा	4608 किमी.^{2}	शाजापुर	61.91 किमी.^{2}
बैतूल	3662 किमी.^{2}	रतलाम	75.16 किमी.^{2}
श्योपुर	3443 किमी.^{2}	राजगढ़	171.80 किमी.^{2}
सिवनी	3063 किमी.^{2}	दतिया	213 किमी.^{2}

सर्वाधिक एवं न्यूनतम वन क्षेत्र प्रतिशत वाले शीर्ष 5 जिले

सर्वाधिक		न्यूनतम	
जिला	वन क्षेत्र प्रतिशत	जिला	वन क्षेत्र प्रतिशत
बालाघाट	53.34%	उज्जैन	0.60%
श्योपुर	52.13%	शाजापुर	1%
उमरिया	44.10%	रतलाम	1.55%
मंडला	44.43%	राजगढ़	2.79%
सीधी	41%	मंदसौर	4.35%

- शीर्ष 3 वनावरण वाले जिले– बालाघाट > छिंदवाड़ा > बैतूल

मध्य प्रदेश वन नीति

- मध्य प्रदेश में वन विभाग की स्थापना 1860 में हुई थी। संभवतः मध्य प्रदेश भारत का ऐसा प्रथम राज्य है। जहाँ ब्रिटिश कालीन वन नीति 1894 का क्रियान्वयन प्रारम्भ किया गया था।
- मध्य प्रदेश की प्रथम वन नीति वर्ष 1952 में लागू की गई थी। तत्पश्चात् 4 अप्रैल 2005 को नई वन नीति घोषित की गयी, जिसके प्रमुख उद्देश्य हैं–

(i) वनाश्रित परिवारों हेतु वन आधारित वैकल्पिक रोजगार की सतत उपलब्धता के अवसर सृजित करना।

(ii) सीमाओं के समस्त लंबित विवादों का निराकरण करते हुए वन क्षेत्रों का व्यवस्थापन करना तथा वन खण्डों का सीमांकन पूर्ण करना।

(iii) वर्तमान में व्यवस्थापित अतिक्रमित क्षेत्रों को शीघ्रातिशीघ्र सीमांकित करना तथा भविष्य में अतिक्रमण को रोकने के प्रभावी उपाय करना।

(iv) वन ग्रामों को राजस्व ग्रामों में परिवर्तित करने की कार्यवाही पूर्ण करना।

(v) वन सुरक्षा प्रणाली को सुदृढ़ बनाने के लिए संचार सुविधाओं का विस्तार करना।

(vi) संवेदनशील क्षेत्रों में विशेष सुरक्षा बलों की व्यवस्था सुदृढ़ करना।

मध्य प्रदेश में वन प्रबंधन

राष्ट्रीय वन नीति के अनुसरण मे जन भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए वन विभाग ने संयुक्त वन प्रबंधन की अवधारणा को स्वीकार किया है। प्रदेश में वन सुरक्षा एवं वन विकास के समस्त कार्यों में जन भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए मध्य प्रदेश में 22 अक्टूबर, 2001 को संशोधित संकल्प पारित किया गया। जिसमें तीन प्रकार की संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के गठन का प्रावधान है। जो निम्नवत् हैं—

समितियों एवं कार्यों का विवरण

समितियों के प्रकार	समितियों के क्षेत्र	प्रबंधित क्षेत्र
ग्राम वन समिति	9650	37268 वर्ग किमी.
वन सुरक्षा समिति	4747	25904 वर्ग किमी.
ईको विकास समिति	831	3702 वर्ग किमी.

1. **ग्राम वन समिति**—बिगड़े वन क्षेत्रों में वन खण्ड सीमा से पाँच किलोमीटर दूर तक विस्तृत ग्रामों में आने वाली समितियों को ग्राम वन समिति कहा जाता है।
2. **वन सुरक्षा समिति**—सघन वन क्षेत्रों में वन खण्ड सीमा में पाँच किलोमीटर दूर तक विस्तृत ग्रामों में आने वाली समितियों को वन सुरक्षा समिति कहा जाता है।

3. **ईको विकास समिति**—राष्ट्रीय उद्यान तथा अभयारण्य क्षेत्रों में स्थित सभी ग्राम, उनकी बाहरी सीमा से पाँच किलोमीटर की परिधि में स्थित ऐसे ग्राम जिनका प्रभाव संरक्षित क्षेत्र के प्रबंधन पर पड़ता है तथा बफर क्षेत्र के समस्त ग्रामों में वनों के प्रबंधन तथा जन सहयोग प्राप्त करने हेतु बनाई गई समिति को इको विकास समिति कहा जाता है।

राज्य वन विकास अभिकरण

- मध्य प्रदेश में राज्य वन विकास अभिकरण का गठन 19 अप्रैल 2010 को किया गया, जिसका उद्देश्य संयुक्त वन प्रबंधन समितियों के माध्यम से बिगड़े वन क्षेत्रों तथा रिक्त वन क्षेत्रों में वृक्षारोपण को अधिक सुदृढ़ एवं विकसित करना है।

क्षेत्रीय वन ईकाइयाँ

ईकाइयों के प्रकार	संख्या
वृत्त	16
वन मण्डल	63
उपवन मण्डल	135
परिक्षेत्र	473
उप वन परिक्षेत्र	1871
परिसर	8286

वन सम्बन्धी प्रमुख अधिनियम

- **भारतीय वन अधिनियम 1927**—वनों की उपज के अभिवहन एवं शुल्क से सम्बन्धित यह अधिनियम राज्य में 1 नवम्बर, 1956 से लागू है। इसके अतिरिक्त वन संरक्षण एवं प्रबंधन हेतु म.प्र. ग्राम वन अधिनियम 2015 तथा म.प्र. संरक्षित वन अधिनियम 4 जून, 2015 से लागू है।
- **वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972**—यह अधिनियम देश की परिस्थितिकीय एवं पर्यावरण सुरक्षा सुनिश्चित करने तथा वन्य जीव पक्षियों और पादपों के संरक्षण एवं आनुषंगिक विषयों का उपबंध करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय स्तर पर 9 सितम्बर, 1972 को लागू किया गया तथा मध्य प्रदेश में 15 नवम्बर, 1974 को लागू हुआ था।
- **वन संरक्षण अधिनियम 1980**—यह अधिनियम वनों के संरक्षण तथा उनसे जुड़े विवादों के लिए अथवा उसके सहायक या आनुषंगिक विषयों के लिए उपबंध करने हेतु 25 अक्टूबर, 1980 को लागू किया गया था।
- **मध्य प्रदेश वन उपज (व्यापार विनियमन) अधिनियम 1969**—यह अधिनियम इमारती लकड़ी को छोड़कर समस्त वन उपज के व्यापार विनियमन के उद्देश्य से 1 नवम्बर, 1969 को लागू किया गया।
- **मध्य प्रदेश लोक वानिकी अधिनियम 2001**—यह अधिनियम प्रदेश में निजी एवं राजकीय वृक्ष आच्छादित क्षेत्रों के प्रबंधन तथा आनुषंगिक विषयों को विनियमित करने के उद्देश्य से 12 अप्रैल 2001 को लागू किया गया।
- **जैव-विविधता अधिनियम 2002**—यह अधिनियम जैविक संसाधनों के अनुसंधान एवं जैव सर्वेक्षण को सहज एवं सुलभ बनाने के उद्देश्य से 21 नवम्बर, 2014 को लागू किया गया।

राष्ट्रीय उद्यान

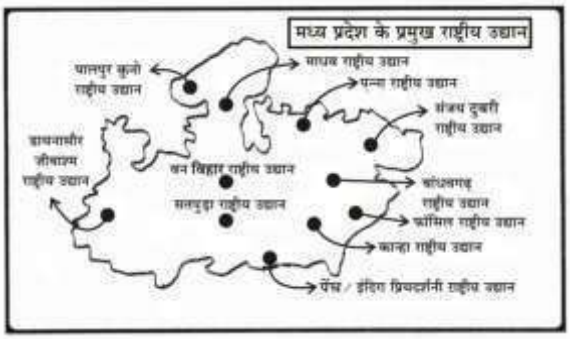

राष्ट्रीय उद्यान में वन्यजीव एवं वनों को पूर्ण रूप से संरक्षित किया जाता है। इसमें मानवीय गतिविधियाँ एवं पशुचारण पर पूर्णतः प्रतिबंध होता है। इसमें एक या एक से अधिक पारिस्थितिक तंत्र शामिल होते हैं। मध्य प्रदेश में वन्य जीवों को संरक्षण प्रदान करने के लिए राष्ट्रीय उद्यान अधिनियम के अन्तर्गत 11 राष्ट्रीय उद्यान हैं।

1. **कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान**—कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान मंडला जिले के अंतर्गत आता है। यह मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान है। यह लगभग 940 वर्ग किमी. में फैला हुआ है। इसे 1933 में अभयारण्य तथा 1955 में नेशनल पार्क बनाया गया था। कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान को 1974 में बाघ परियोजना (Tiger Reserve) में शामिल किया गया। इसमें बाहरसिंघा, चीतल, चिगार, बाघ, तेंदुआ, भालू आदि जानवर पाये जाते हैं। यहाँ घलोघाठी तथा बंजर घाटी प्रमुख दर्शनीय स्थल हैं।
   इस राष्ट्रीय उद्यान में वर्ल्ड बैंक (World Bank) की सहायता से पार्क इंटरप्रिटेशन योजना चल रही है।
2. **पन्ना राष्ट्रीय उद्यान**—यह बुन्देलखण्ड के पन्ना एवं छतरपुर में फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल लगभग 543 वर्ग किमी. है। इसकी स्थापना 1981 में हुई। इसे 1994 में बाघ परियोजना में शामिल किया गया।
3. **सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान**—यह होशंगाबाद जिले में लगभग 528 वर्ग किमी. क्षेत्र में फैला है। इसकी स्थापना 1981 में हुई यहाँ कृष्ण मृगों की संख्या अधिक है।
4. **बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान**—यह उमरिया, शहडोल जिले में लगभग 448 वर्ग किमी. में फैला हुआ है। इसकी स्थापना 1968 में हुई इसे 1993 में बाघ परियोजना में शामिल किया गया। यह 32 पहाड़ियों से घिरा हुआ है।
   यहाँ बाघों का सर्वाधिक घनत्व है। इसमें सफेद शेर पाये जाते हैं। इसे हाथियों के निवास स्थान के लिए भी विकसित किया जा रहा है। इस राष्ट्रीय उद्यान में गौर पुनर्वास योजना संचालित की जा रही है।
5. **माधव राष्ट्रीय उद्यान**—इसे शिवपुरी जिले में 1958 में स्थापित किया गया। इसका क्षेत्रफल लगभग 375.23 वर्ग किमी. है। इससे राष्ट्रीय राजमार्ग आगरा-मुम्बई गुजरता है। जार्ज कैंसल भवन यहीं पर है।
6. **पेंच राष्ट्रीय उद्यान**—यह सिवनी-छिन्दवाड़ा जिले तथा महाराष्ट्र के कुछ भाग में फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल लगभग 293 वर्ग किमी. है। इसकी स्थापना 1975 में हुई थी। इस राष्ट्रीय उद्यान में मोगली लैंड क्षेत्र तथा वाटर राफ्टिंग सुविधा है।
7. **फॉसिल जीवाश्म राष्ट्रीय उद्यान**—यह क्षेत्रफल की दृष्टि से मध्य प्रदेश का सबसे छोटा राष्ट्रीय उद्यान है, जो मंडला, डिंडोरी जिले में लगभग 0.27 वर्ग किमी. क्षेत्रफल में फैला हुआ है।

इसकी स्थापना 1983 में की गई। इस उद्यान में पादपों तथा जन्तुओं के उद्यान पाये जाते हैं।

8. **संजय राष्ट्रीय उद्यान**—इसकी स्थापना 1981 में मध्य प्रदेश के सीधी जिले में हुई। इस राष्ट्रीय उद्यान का कुछ हिस्सा छत्तीसगढ़ राज्य में चला गया है। इसका क्षेत्रफल लगभग 467 वर्ग किमी. है।
9. **वन विहार**—यह राष्ट्रीय उद्यान भोपाल में सन् 1979 में स्थापित हुआ। इसका क्षेत्रफल लगभग 4.45 वर्ग किमी. है।
10. **डायनासौर जीवाश्य उद्यान**—यह मध्य प्रदेश का दूसरा बड़ा जीवाश्य राष्ट्रीय उद्यान है। जो धार जिले में बाघ और जोबट नदी के तट पर 2011 में स्थापित किया गया। इसका कुल क्षेत्रफल 0.897 वर्ग किमी. है। इस उद्यान में 2015 में बाघ नदी के किनारे 6.5 करोड़ वर्ष पुराने डायनासोर के जीवाश्य (पद चिन्ह) प्राप्त हुए है।
11. **पालपुर कूनो राष्ट्रीय उद्यान**—12 अक्टूबर 2018 को कूनो राष्ट्रीय उद्यान की स्थापना की गई। 748.76 वर्ग किमी. क्षेत्रफल में, श्योपुर जिले में स्थित है। एशियाई शेरों के पुनर्वास के लिए कूनो राष्ट्रीय उद्यान का चयन किया गया है। इसी राष्ट्रीय उद्यान में अफ्रीका के तंजानिया से चीते लाकर बसाये गये हैं।

ओंकारेश्वर राष्ट्रीय उद्यान—यह राष्ट्रीय उद्यान खण्डवा में स्थित है। इसका क्षेत्रफल 293 वर्ग किमी. है। (नोट- आर्थिक सर्वेक्षण और मध्य प्रदेश वन रिपोर्ट के अनुसार यह राष्ट्रीय उद्यान की श्रेणी में नहीं आता है।)

मध्य प्रदेश : राष्ट्रीय उद्यान

राष्ट्रीय उद्यान	जिला	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)	प्रमुख वन्य प्रणाली
* बाँधवगढ़	उमरिया	448.842	बाघ, तेंदुआ, चीतल, साँभर, सफेद शेर
राष्ट्रीय फॉसिल उद्यान (सबसे छोटा)	डिण्डौरी	0.27	वनस्पति जीवाश्म
* पन्ना	पन्ना/छत्तरपुर	543	बाघ, तेंदुआ, चीतल, साँभर गौर कृष्णमृग, बायसन, बारहसिंगा
* पेंच	सिवनी, छिन्दवाड़ा/ नागपुर	449.39	बाघ, तेंदुआ, चीतल, साँभर, गौर, मुंजक, हिरण
* सतपुड़ा	होशंगाबाद	528.729	बाघ, तेंदुआ, चीतल, साँभर, गौर, भालू, मुंजक, हिरण
* संजय	सीधी/सिंगरौली	466.7	बाघ, तेंदुआ, चीतल, नीलगाय, चिकारी आदि
* कान्हा किसली (सबसे बड़ा)	मण्डला/ बालाघाट	940	बाघ, तेंदुआ, चीतल, साँभर, गौर, कृष्णमृग, बारहसिंगा
माधव	शिवपुरी	375.23	तेंदुआ, चीतल, साँभर, चिकारा, जंगली सूअर प्रवासी पक्षी, मगरमच्छ इत्यादि
वन विहार	भोपाल	4.45	मध्य प्रदेश के सभी वन्य प्राणी
डायनासोर जीवाश्म उद्यान (प्रस्तावित)	धार	0.897	डायनासोर के जीवाश्म
ओंकारेश्वर	खण्डवा	293	राज्य के सभी वन्य प्राणी
पालपुर कूनो	श्योपुर	748.761	एशियाई शेर, चीता, भालू

नोट:- * वाले मध्य प्रदेश टाइगर प्रोजेक्ट में शामिल राष्ट्रीय उद्यान है।

- अक्टूबर, 2019 में मध्य प्रदेश सरकार के रातापानी वन्यजीव अभयारण्य के कोर क्षेत्र को टाइगर रिजर्व बनाने की मंजूरी प्राप्त हो गई।
- राजकीय दूधराज पक्षी के संरक्षण हेतु सरदारपुरा अभयारण्य बनाया गया है।
- केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मंत्रालय द्वारा पंचमढ़ी को बायोस्फीयर रिजर्व घोषित किया गया है। यह मध्य प्रदेश का पहला एवं देश का 10वाँ बायोस्फीयर रिजर्व क्षेत्र है।

- पेंच राष्ट्रीय उद्यान का नाम बदलकर इंदिरा गांधी प्रियदर्शनी राष्ट्रीय उद्यान कर दिया है।
- वर्ष 2022 में जारी बाघ गणना के अनुसार भारत में सर्वाधिक बाघ मध्य प्रदेश (785) पाये गये हैं, जबकि राष्ट्रीय स्तर पर बाघों की कुल संख्या 3167 है।
- बाँधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान में शेरों का घनत्व देश में सर्वाधिक है। यहाँ सफेद शेर पाये जाते हैं जबकि सर्वाधिक बाघ पेंच टाइगर रिजर्व में हैं।
- मध्य प्रदेश में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक कान्हा किसली राष्ट्रीय उद्यान में आते हैं।
- विश्व का प्रथम व्हाइट टाइगर सफारी मुकुंदपुर सतना में है।

वन जीव अभयारण्य

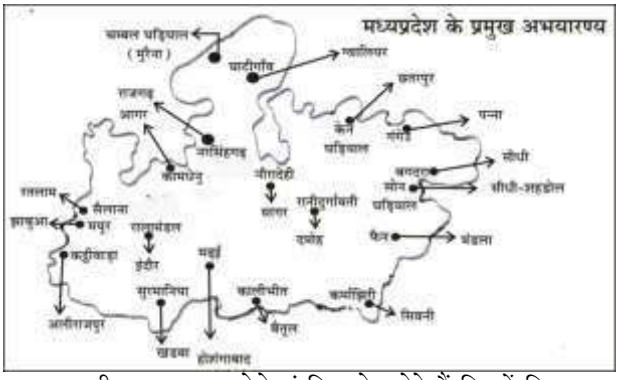

- वन्य जीव अभयारण्य ऐसे संरक्षित क्षेत्र होते हैं जिसमें शिकार पर पूर्णतः प्रतिबंध होता है। लेकिन पशुचारण एवं मानवीय गतिविधियों की सीमित अनुमति होती है। वन्यजीवों को संरक्षित करने के लिए मध्य प्रदेश सरकार ने 27 वन्य जीव अभयारण्य बनाये हैं तथा तीन अन्य प्रस्तावित हैं।

मध्य प्रदेश के प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य

नाम	जिला	क्षेत्रफल	प्रमुख वन्य जीव
नौरा देही (सबसे बड़ा)	सागर	1194.64	शेर, तेंदुआ, चीतल, साँभर, नीलगाय, जंगली कुत्ता
सरदारपुर	धार	348.12	खरमौर
बोरी	होशंगाबाद	485.715	शेर, तेंदुआ, चीतल, साँभर, गौर, नीलगाय, चिकारा
खिवनी	देवास	134.77	तेंदुआ, चीतल, साँभर, नीलगाय, हिरण
नरसिंहगढ़	राजगढ़	57.19	तेंदुआ, चीतल, साँभर, जंगली सूअर, मोर
गांधी सागर	मन्दसौर व नीमच	368.62	तेंदुआ, चीतल, चिकारा, नीलगाय, जलपक्षी
डुबरी (संजय)	सीधी	364.69	शेर, तेंदुआ, चीतल, साँभर, नीलगाय, चिकारा
पंचमढ़ी	होशंगाबाद	492	शेर, तेंदुआ, चीतल, साँभर, गौर, नीलगाय
रातापानी	रायसेन व सिरोह	910.6	शेर, तेंदुआ, चीतल, साँभर, नीलगाय
सिंधौरी	रायसेन	312.036	शेर, तेंदुआ, चीतल, साँभर, नीलगाय
पेंच	सिवनी व छिन्दवाड़ा	118.473	शेर, तेंदुआ, चीतल, साँभर, गौर
राष्ट्रीय चम्बल (घड़ियाल)	मुरैना, भिण्ड	435	घड़ियाल, मगरमच्छ, कछुआ, उदबिलाव, डॉल्फिन
केन (घड़ियाल)	छतरपुर, पन्ना	45.00	घड़ियाल, मगरमच्छ
सोन (घड़ियाल)	सीधी, शहडोल	83.68	घड़ियाल, मगरमच्छ, कछुआ, प्रवासी पक्षी
रालामण्डल (सबसे छोटा)	इन्दौर	2.34	बाघ, तेंदुआ, गौर, भालू
गंगऊ	पन्ना	78.53	तेंदुआ, जंगली सूअर, नीलगाय, चिकारा
सैलाना	रतलाम	12.96	खरमौर
वीरांगना दुर्गावती	दमोह	23.97	चीतल, साँभर, नीलगाय, कृष्ण मृग

कटठी वाडा	अलीराजपुर	90	-
मयूर अभ्यारण्य	झाबुआ	-	-
कालीभीत (प्रस्तावित)	बैतुल	-	-
सुरमैनिया (प्रस्तावित)	खण्डवा	178.21	-
मान्धाता (प्रस्तावित)	खण्डवा	69.24	-
बगदरा	सींधी	478	-

मध्य प्रदेश के प्रमुख वानिकी संस्थान

संस्थान	जिला
ट्रॉपिकल फॉरेस्ट्री रिसर्च इंस्टीट्यूट (1988)	जबलपुर
मध्य प्रदेश का प्रथम वन्य स्कूल	शिवपुरी
मध्य प्रदेश का प्रथम फॉरेस्ट कॉलेज (1979)	बालाघाट
मध्य प्रदेश का द्वितीय फॉरेस्ट कॉलेज (1980)	बैतूल
इण्डियन इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट मेनेजमेंट (1982)	भोपाल
इंस्टीट्यूट ऑफ फॉरेस्ट्री रिसर्च एण्ड ह्यूमेन रिसोर्स डवलपमेंट (1995)	छिन्दवाड़ा

मध्य प्रदेश के प्रमुख वृक्ष एवं वन क्षेत्र

भिलावा वृक्ष—मध्य प्रदेश के छिन्दवाड़ा में भिलावा वृक्ष पाये जाते हैं। जिनका उपयोग स्याही, पेंट और औषधि निर्माण में किया जाता है।

साल वृक्ष—यह प्रदेश के मण्डला, डिडोरी एवं होशंगाबाद जिलों के लाल-पीली मृदा क्षेत्र में पाये जाते हैं। साल के वृक्ष बोरार नामक कीट लग जाने से नष्ट हो जाते हैं।

सागौन वृक्ष—यह वृक्ष काली मिट्टी वाले उत्तरी क्षेत्र होशंगाबाद जिले की बोरी घाटी में 3.20 मीटर परिधि में पाये जाते हैं। इनका उपयोग इमारती लकड़ी के रूप में किया जाता है।

लाख—लाख एक प्रकार प्राकृतिक राल है, जो मादा लाख कीट के स्राव से निर्मित होता है। यह प्रदेश के सागर, दमोह, डिण्डोरी, मंडाला, शहडोल जिले में पलास, बेरी कुसुम, अरहर आदि के वृक्षों पर इसकी खेती की जाती है। लाख का सरकारी कारखाना उमरिया जिले में स्थित है। लाख के उत्पादन में म.प्र. का देश में तीसरा स्थान है।

खैर—खैर का उपयोग कत्था बनाने में किया जाता है। जिसके कारखाने शिवपुरी और बानमौर में स्थित हैं।

खैर वृक्ष शिवपुरी, मुरैना, जबलपुर, उमरिया, सागर और गुना जिलों में पाये जाते हैं।

मध्य प्रदेश में वन सम्पदा

- पर्यावरण की दृष्टि से एक तिहाई क्षेत्र में वन होना चाहिए। वन सम्पदा राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ एवं सम्पन्न बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है। वन भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं। भूमि के अपरदन को रोकते हैं तथा स्वच्छ पर्यावरण प्रदान करने में भी वनों की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
- मध्य प्रदेश भारत का सर्वाधिक वनाच्छादित राज्य है, जहाँ विभिन्न प्रकार के वन, वन्यजीव एवं प्राकृतिक संसाधन पाये जाते हैं।
- मध्य प्रदेश का कुल वन क्षेत्र 77,492.60 वर्ग किमी. है। जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 25.14 प्रतिशत है तथा देश के कुल वन क्षेत्र का 10.8 प्रतिशत है।

देश की तुलना में मध्य प्रदेश के वन

देश/राज्य	वन क्षेत्र (वर्ग किमी.)	वन क्षेत्र प्रतिशत में	भौगोलिक क्षेत्र (वर्ग किमी.) में
भारत	8,09,537	24.62	32,87,263
मध्य प्रदेश	77,492.60	25.14	3,08,252

मध्य प्रदेश में वन क्षेत्र का वर्गीकरण

अतिसघन वन क्षेत्र	9.65%
मध्यम सघन वन क्षेत्र	46.62%
खुले वन क्षेत्र	43.73%

वन सम्पदा एवं पर्यावरण

- भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से सर्वाधिक वन मध्य प्रदेश में पाये जाते हैं।
- मध्य प्रदेश की पहली वन नीति 1952 में बनी थी। 4 अप्रैल, 2005 को मध्य प्रदेश की नयी वन नीति की घोषणा की गई।
- वनों का शत प्रतिशत राष्ट्रीयकरण करने वाला देश का प्रथम राज्य मध्य प्रदेश है।
- वनों का राष्ट्रीयकरण 1970 में किया गया। सर्वप्रथम तेंदूपत्ता का राष्ट्रीयकरण किया गया।
- मध्य प्रदेश में देश के 41 प्रतिशत सागौन के वृक्ष हैं। राज्य के कुल वन सम्पदा क्षेत्रफल के 19.64 प्रतिशत क्षेत्र सागौन के हैं।
- मध्य प्रदेश में देश के 50% साल वृक्ष हैं जो राज्य के कुछ वन क्षेत्रफल के 16.5 प्रतिशत क्षेत्र में साल के वन हैं।
- देहरादून स्टेट फॉरेस्ट रिसर्च इंस्टीट्यूट एंड कॉलेज के 4 क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्रों में से एक मध्य प्रदेश के जबलपुर में स्थित है।
- मध्य प्रदेश वानिकी योजना का आरम्भ सितंबर 1995 में किया गया।
- मध्य प्रदेश के बालाघाट में वन राजकीय महाविद्यालय की स्थापना 1979 में की गई है।
- मध्य प्रदेश ईको पर्यटन विकास बोर्ड का गठन 12 जुलाई 2005 को किया गया।
- मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भोपाल में है।
- मध्य प्रदेश झील संरक्षण प्राधिकरण की स्थापना 2014 में की गई है।

05.

मध्य प्रदेश : नदियाँ एवं झीलें

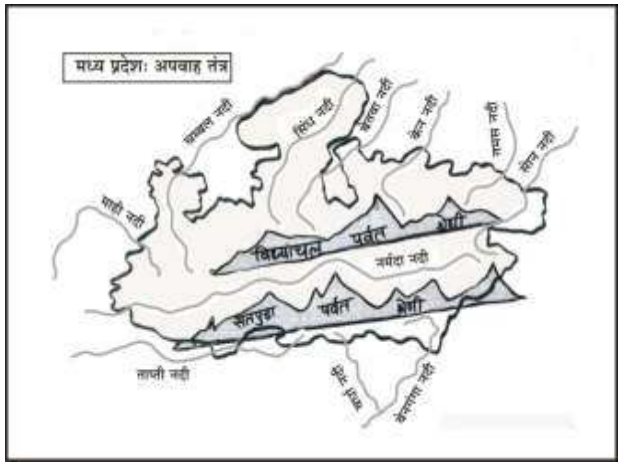

- मध्य प्रदेश के आर्थिक विकास में नदियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है यहाँ लगभग सभी दिशाओं में नदियाँ प्रवाहित होती हैं अधिकांशतः नदियाँ उत्तर पश्चिम दिशा में प्रवाहित होती हैं।
- मध्य प्रदेश में स्थित मैकाल पर्वत श्रेणी, विंध्य पर्वत श्रेणी एवं सतपुड़ा पर्वत श्रेणी से प्रायद्वीपीय भारत की अधिकांश नदियाँ निकलती हैं।
- मैकाल श्रेणी से सबसे अधिक नदियाँ निकलती हैं इसलिए इस श्रेणी को वाटर शेड के नाम से जाना जाता है। विंध्य व सतपुड़ा श्रेणियाँ जल विभाजक का कार्य करती हैं।

मध्य प्रदेश में नदियों का अपवाह तंत्र

गंगा अपवाह तंत्र	उपतंत्र	नदियाँ
गंगा अपवाह तंत्र	यमुना	सिंध, चम्बल, जामनी, बेतवा, धसान, केन, पैसुनी, बैथन आदि
	टोंस	बीहर, ओदा, महान आदि
	सोन	जोहिला, बनास, गोपद, रिहंद, कन्हार आदि

- नर्मदा अपवाह तंत्र
- ताप्ती अपवाह तंत्र
- गोदावरी अपवाह तंत्र
- माही अपवाह तंत्र
- महानदी अपवाह तंत्र

Note– गंगा अपवाह तंत्र मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा अपवाह तंत्र है। जो राज्य के उत्तरी एवं उत्तर-पूर्वी जिलों में विस्तृत है। इस तंत्र की अधिकांश नदियाँ उत्तर की ओर प्रवाहित होती हैं।

चम्बल नदी

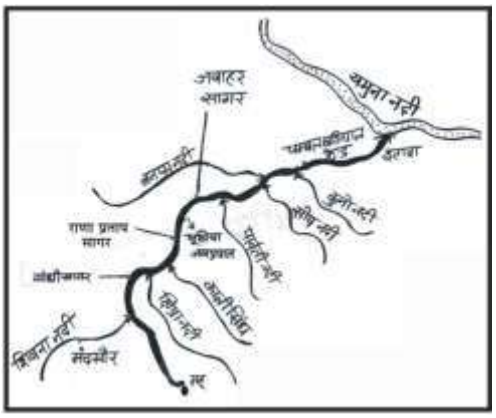

उद्गम स्थल– विंध्य श्रेणी की जानापाव पहाड़ी के वांग्चू पॉइंट से (महू जिला इंदौर)

- यह नदी उत्तर-पूर्व से पूर्वी दिशा में प्रवाहित होती हुई इटावा (उत्तर प्रदेश) के समीप यमुना नदी में मिल जाती है।
- यह नदी मध्य प्रदेश व राजस्थान के मध्य प्राकृतिक सीमा बनाती है।
- चम्बल मध्य प्रदेश की दूसरी सबसे लम्बी नदी है। जिसका कुल अपवाह क्षेत्र 143219 वर्ग कि.मी. एवं कुल लम्बाई 965 कि.मी.
- इसके अन्तर्गत मध्य प्रदेश के इंदौर, धार, रतलाम, मन्दसौर श्योपुर, मुरैना भिण्ड आदि जिले सम्मिलित हैं।
- चम्बल एक अध्यारोपित नदी (Superimposed River) है जो अपने मध्य भाग में उत्खात भूमि वाली भू-आकृति का निर्माण करती है। जिसे चम्बल खड्ड (Ravine of Chambal) कहा जाता है।
- मध्य प्रदेश में चम्बल नदी के खड्ड (बीहड़) ग्वालियर, भिण्ड, मुरैना तथा राजस्थान के भरतपुर एवं धौलपुर के निकटवर्ती भागों में पाये जाते हैं।
- गाँधी सागर बाँध, राणाप्रताप सागर बाँध, जवाहर सागर बाँध आदि चम्बल पर निर्मित प्रमुख जल परियोजनाएं हैं जबकि मंदसौर, कोटा, इटावा, मुरैना चम्बल पर स्थित प्रमुख नगर हैं।

क्षिप्रा/शिप्रा नदी

उद्गम स्थल– काकरी-बर्डी के समीप बणेश्वर कुण्ड (इंदौर)

- इसकी कुल लम्बाई 195 किमी. है। यह मध्य प्रदेश के रतलाम, उज्जैन, मन्दसौर जिलों से प्रवाहित होते हुए कोटा (राजस्थान) के समीप चम्बल नदी में मिल जाती है।
- इस नदी को मालवा की गंगा के नाम से जाना जाता है।
- इस नदी के तट पर महाबलेश्वर मंदिर (उज्जैन), चिंतामन गणेश मंदिर, भर्तृहरि गुफा, कालभैरव मंदिर, कालिया देह महल, राम जनार्दन मंदिर आदि स्थित है।

■ क्षिप्रा नदी के तट पर स्थित उज्जैन में प्रत्येक 12 वर्षों के पश्चात् सिंहस्थ महाकुम्भ मेले का आयोजन होता है।

बेतवा/बेत्रवती नदी

उद्गम स्थल–रायसेन जिले के कुम्हरा गांव (विन्ध्य पर्वत) से (कुल ल0 590 मध्य प्रदेश में 232) यह मध्य प्रदेश के रायसेन, विदिशा, अशोक नगर, टीकमगढ़ गुना आदि जिलों से प्रवाहित होते हुए हमीरपुर (उत्तर प्रदेश) के समीप यमुना नदी में मिल जाती है।

- पुरातात्विक स्थल ओरछा व देवगढ़ भी बेतवा नदी के किनारे स्थित हैं।
- इसे बुन्देलखण्ड की जीवन रेखा एवं मध्य प्रदेश की गंगा भी कहा जाता है।
- माताटीला व राजघाट बाँध, जो मध्य प्रदेश एवं उत्तर प्रदेश की संयुक्त सिंचाई परियोजना है, इसी पर स्थित हैं।

केन नदी

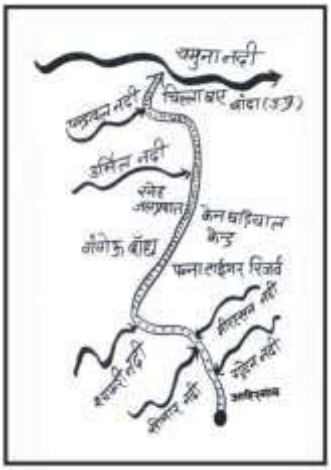

उद्गम स्थल–कैमूर पहाड़ी, कटनी जिले में। इसकी कुल लम्बाई 427 कि.मी. तथा मध्य प्रदेश में 292 कि.मी. है।

- केन नदी छतरपुर और पन्ना जिले की सीमा बनाती हुई बाँदा जिला (उत्तर प्रदेश) के चिल्ला गाँव के समीप भोजहा नामक स्थान पर यमुना नदी में मिल जाती है।
- केन नदी में शजर नामक बहुमूल्य पत्थर पाया जाता है।
- पन्ना बाघ आरक्षित क्षेत्र के मध्य सिमरी नदी के संगम पर गंगऊ बाँध (1901–1915 निर्मित) बरियारपुर बाँध निर्मित किये गये हैं।

सिन्ध नदी

उद्गम स्थल–विदिशा जिले के सिरोंज के समीप एक ताल से

- यह नदी इटावा (उत्तर प्रदेश) के समीप यमुना में मिल जाती है।
- इसमें वर्ष भर जल-भराव रहता है और वर्षा ऋतु में भयंकर बाढ़ आती है और गुना जिले को दो भागों में विभाजित करती है।

काली सिन्ध नदी

उद्गम स्थल–देवास जिले के बागली तहसील के समीप अमोदिया

- यह मध्य प्रदेश के शाजापुर और नरसिंहगढ़ जिले से प्रवाहित होते हुए नरौरा (राजस्थान) नामक स्थान पर चम्बल नदी में मिल जाती है।

टोंस/तमसा नदी

उद्गम स्थल–सतना जिले के मैहर (कैमूर पहाड़ी) में तमसा कुंड से

- यह इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) के सिरसा नामक स्थान पर गंगा नदी में मिल जाती है।

सोन नदी

उद्गम स्थल–अमरकंटक पहाड़ी से (जिला अनूपपुर)

- यह अमरकंटक पहाड़ी के उत्तरी किनारे पर जलप्रपातों की श्रृंखला का निर्माण करती है, और पटना (बिहार) के समीप रामनगर (दानापुर) में गंगा नदी में मिल जाती है।
- सोन नदी गंगा के दक्षिण मिलने वाली सबसे बड़ी नदी है। जो कैमूर और छोटानागपुर पठार के मध्य सीमा बनाती है।
- सोन नदी में दुर्लभ प्रजाति के कछुए पाये जाते हैं। इसमें सोन घड़ियाल अभयारण्य भी है।

नर्मदा नदी

उद्गम स्थल–मैकाल श्रेणी के अमरकंटक पहाड़ी से यह दक्षिण में सतपुड़ा और उत्तर में विंध्याचल पर्वत श्रेणियों के मध्य भ्रंश घाटी से प्रवाहित होते हुए भड़ौच (गुजरात) के समीप कैम्बे (खम्भात) की खाड़ी में गिरती है और एश्चुएरी (ज्वारनदमुख) निर्माण करती है। यह डेल्टा का निर्माण नहीं करती है। इसकी कुल लम्बाई 1312 किमी. है।